F:\ 6 February Boklet. TS

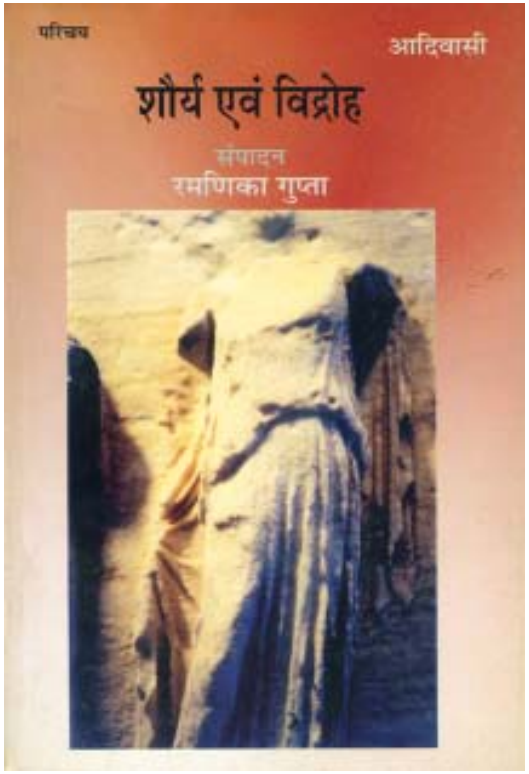

आदिवासी शौर्य एवम् विद्रोह

(2003/2004)

सम्पादक : रमणिका गुप्ता

आदिवासी समाज आर्य वर्ण व्यवस्था में नहीं आता। आर्यों के दस्तावेज़ों से यह जाहिर होता है कि उन्होंने पराजित आदिवासी शौर्य गाथाओं को जानबूझ कर दबाया ही नहीं बल्कि गलत ढंग से पेश कर आदिवासी शौर्य को अपमानित भी किया। लोक साहित्य में आदिवासी वीरों, वीरांगनाओं और उनके शौर्य एवं विद्रोह की अनेकों गाथाएँ बिखरी पड़ी हैं, जरूरत हैं उन्हें चुनने की।

इस पुस्तक में आदीवासी विद्रोह और उन वीरांगनाओं एवं वीरों की कथा दर्ज़ है, जो झारखण्ड, महाराष्ट्र, बस्तर, आन्ध्र प्रदेश तथा कई अन्य राज्यों में अंग्रेजों से टक्कर लेते हुए शहीद हो गए।

अंग्रेजों द्वारा जिन आदिवासी समूहों को आदतन अपराधी घोषित कर दिया गया था, उनकी कष्ट्र प्रद गाथा भी इसमें दर्ज़ हैं। यह पुस्तक अभी तक विस्मृति आदिवासी इतिहास में खिड़की खोलती है।

मूल्य : 45/-

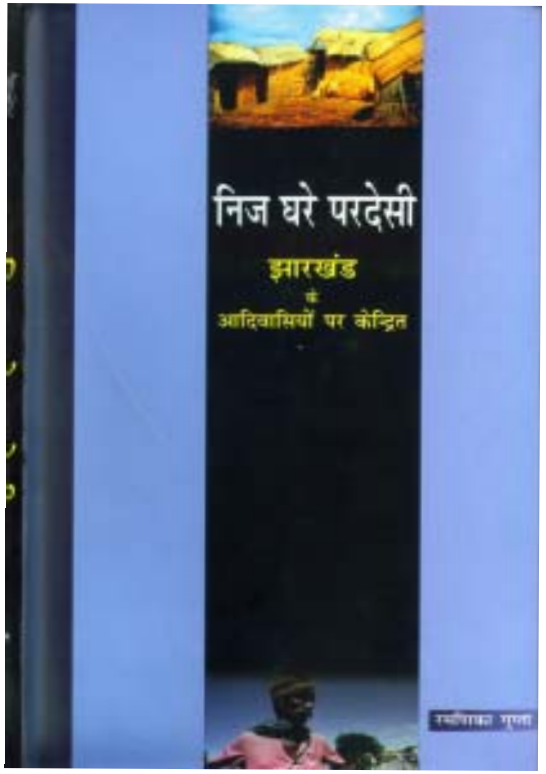

निज घरे परदेसी

(2004)

रमणिका गुप्ता

हजारों बरसों से आदिवासियों को खदेड़ने का काम जारी है। उनका शोषण और दोहन। उनकी संस्कृति को न तो यहाँ के वासियों ने पनपने या विकसित होने दिया और न ही उसे आत्मसात कर मूलधारा में शामिल होने दिया। जिससे इन पर उनका वर्चस्व कायम रहे।

फलस्वरूप रूक गया उनकी संस्कृति और भाषा का विकास। इस सबके बावजूद उसने अपनी पहचान आदिवासी के रूप में कायम रखी।

भले उसे गूंगा बना दिया गया था अभिव्यक्ति की ताकत नहीं थी उसके पास, पर अन्याय हद से गुजर जाने पर उसके हाथ गतिशील हो उठते। आज कोई सबसे बड़ा खतरा अगर आदिवासी जमात को है तो वह उसकी पहचान मिटने का है।

रमणिका जी के लेखों की यह पुस्तक आदिवासी मुद्दों पर किए संघर्षों की कथा ही नहीं उनका आँखों देखा हाल भी है। इसमें आदिवासी जिजिविषा और सरकारी उपेक्षा का एतिहासिक विवरण प्रस्तुत है।

मूल्य : 200/-

अपने घर की तलाश में

(2004)

निर्मला पुतुल

निर्मला पुतुल का युवा कवि-स्वर अपनी गहरी संवेदना, समाज-बोध और एक्टिविस्ट दृढ़ता के लिए अलग से सुना और पहचाना जा रहा है।

निर्मला पुतुल की कविता में एक कड़ियल स्त्रीवादी स्वर सुनाई दे सकता है। लेकिन इसे कवि के समूचे काव्यलोक का एक गवाक्ष-भर मानना होगा।

निर्मला पुतुल की कविताएँ, इसीलिए, स्त्री-चेतना-भर से बहुत आगे जाकर संताली नवजागरण के उन्मेष की भाँति कानों में बजती हैं।

निर्मला पुतुल की कविता संताली, कविता के प्रांतर में वसंतागम की उद्घोषणा भी है और उसकी आँखें भी।

मूल्य : 125/-

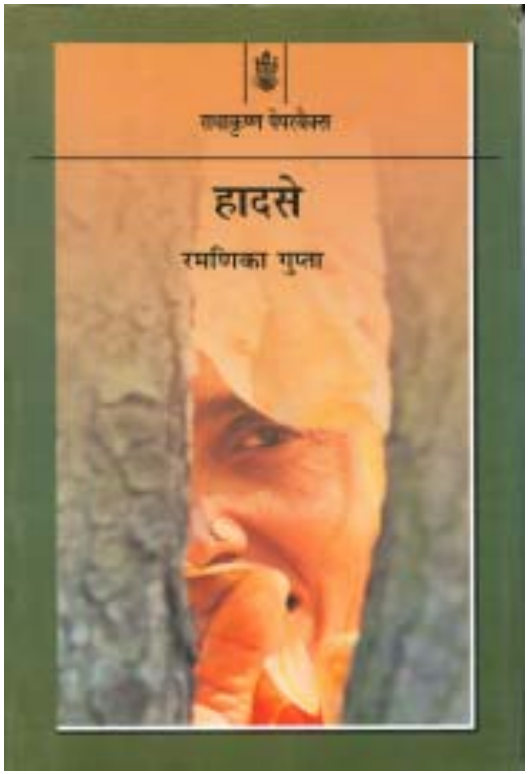

हादसे

(2005)

रमणिका गुप्ता

इस आत्मकथा को स्त्री के अपने चुनाव की कहानी भी कहा जा सकता है। पटियाला के बड़े मिलिटरी अफसर की जिद्दी और अपने मन का करने वाली लड़की जो अपनी हरकतों से बार-बार बाप और उनके परिवार को असुविधाओं में डालती है, खुली मीटिंगों में उनके सामन्ती दुमुँहेपन पर प्रहार करती है, विभाजन की त्रासदी झेलती मुस्लिम महिलाओं की आवाज़ बनकर जवाब माँगती है और फिर अपने मन से क्षत्रिय (राजपूत) परिवार छोड़कर (गुप्ता) से शादी करके बिहार (झारखण्ड समेत) चली आती है। यहाँ आकर पति से विद्रोह करके मजदूरों-कामगारों के बीच उनके संघर्ष का जीवन चुनती है।

इस आत्मकथा को सामन्तवाद और लोकतंत्र के खुले द्वन्द्व की तरह भी पढ़ा जा सकता है।

इन्हीं तूफानी झंझाबातों से गुजरकर आई है रमणिका गुप्ता। आर्य समाज, कांग्रेस, समाजवादी और कम्युनिस्ट होने के नाटकीय मोड़ों का इतिहास भी है और विकास भी।

मूल्य : 200/-

आदिवासी लोक 1

(2006)

रमणिका गुप्ता

आदिवासी अस्मिता की पड़ताल करती है यह पुस्तक। आदिवासी-लोक खण्ड 1 पुस्तक में पूर्वोत्तर के मंगोल, इण्डो बर्मी या इण्डो तिब्बती आदिवासी समूहों बोड़ो, हजाङ, राभा, कार्बी आपातानी, कोक-बोरोक, मिजो व खासी, नीलगिरी के टोडा व कोटा, दक्षिण के बंजारे लाम्बाड़ी, बेड़ा, गोंड, राजगोंड, झारखण्ड के संताल, मुंडा, खडिया, हो, उराँव, राजस्थान और मध्य प्रदेश के भील, मीणा, डांग व सहरिया समूहों के लेखकों ने अपने उद्‌गम, जड़ों और बसाहटों की खोज कर अपनी अस्मिता को चिह्नित किया है। वे अपने-अपने समूहों व समाज की लोकतांत्रिक सामाजिक व्यवस्था, प्रताजीय पहचान, इतिहास, संस्कृति, जीवनशैली, न्याय-व्यवस्था व परंपरागत- स्वशासन, व्यवस्था से भी हमें परिचित कराते हैं और एक ऐसे समाज का झरोखा खोलती हैं, जिससे हम या तो अनजान थे या ऐतिहासिक व सामाजिक कारणों से हमने उस मूल्यवान धरोहर को उपेक्षित कर रखा था। आइए, इस पुस्तक के माध्यम से हम एक उदात्त हृदया, सहयोगी-प्रकृति समाज के मूल्यों व अस्मिता और जीवंतता के रूबरू होवें।

मूल्य : 350/-

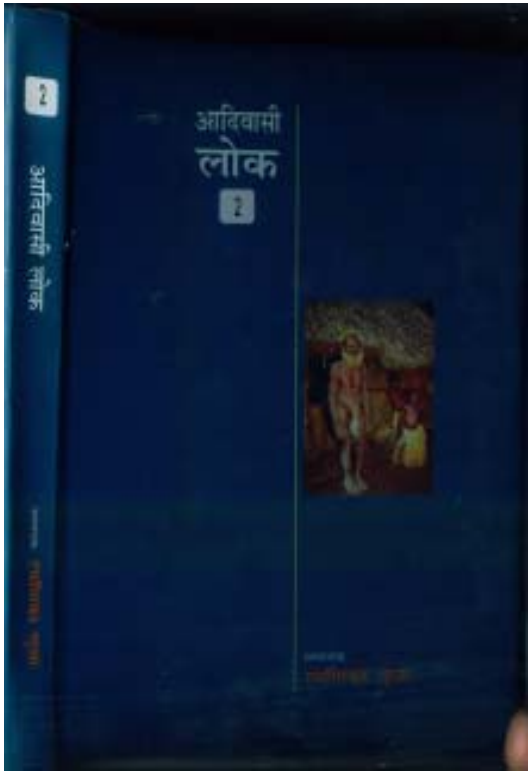

आदिवासी लोक 2

(2006)

रमणिका गुप्ता

इस पुस्तक में भिन्न-भिन्न भाषा-भाषी आदिवासी लेखकों ने अपनी-अपनी संस्कृति, अपनी लोकोत्तियों, मुहावरों, लोकगीतों, लोककथाओं, लोक-कथाओं, नृत्यों, उत्सवों अनुष्ठानों, पर्वों, और जीवनशैली को अपने-अपने ढंग से प्रस्तुत किया है। इसमें पूर्वोतर के मिजो, बोड़ो, राभा, खासी, महाराष्ट्र और गुजरात व मध्यप्रदेश के भील, मीणा व अन्य आदिवासी समुदायों तथा झारखंड के संताल, उराँव, हो, खडिया, मुंडा समुदाय के लेखक शामिल हैं। यह पुस्तक उस आदिवासी लोक की पहचान कराती है, जिससे पूरा भारत अभी अनजान है। अपने भारत को पूरी तरह जानने के लिए यह पुस्तक एक जरूरी दस्तावेज़ है।

मूल्य : 350/-

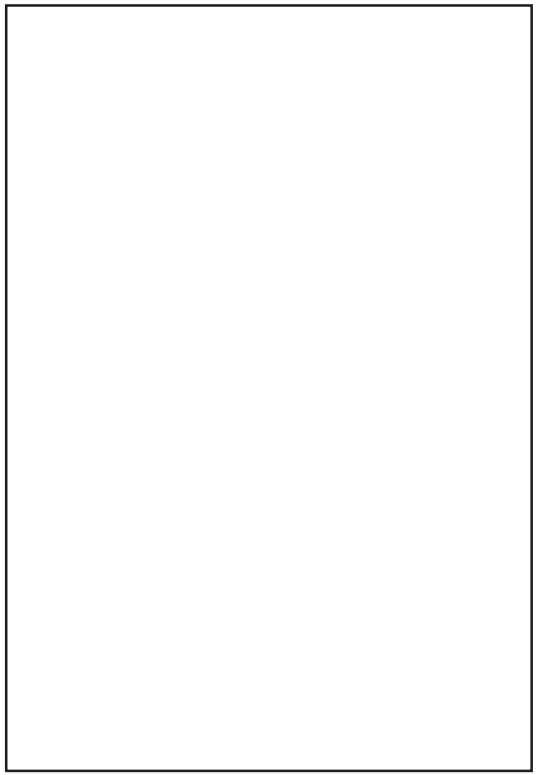

भारत के आदिवासी लेखक

(2006)

सम्पादक : रमणिका गुप्ता

चार वाल्यूम में प्रकाशित इस शृंखला में भारतीय साहित्य की सभी विधाओं के आदिवासी लेखकों का ब्योरा दर्ज है।

यह पुस्तक न केवल लेखकों का व्यक्तिगत परिचय देती है बल्कि लेखकों के साहित्यिक अवदान के साथ-साथ, साहित्य क

माध्यम से उनकी संस्कृति, भाषा और अपने-अपने समाज की विशिष्ट पहचान के रक्षार्थ एवं प्रोत्साहन हेतु उनके प्रयासों की पड़ताल भी करती है।

मूल्य : 450/-

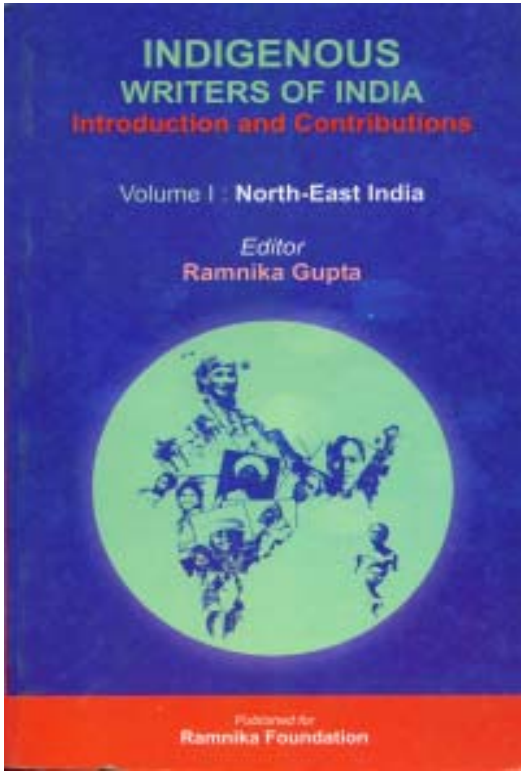

Indigenous Writers of India Introduction and Contributions

(2006)

Editor : Ramnika Gupta

This series, running into four volumes, presents biographies of indigenous writers of India, convering all genres of literature. It offers not only personal data and list of publications of individual writers, but also a window into their culture and the various ways that each of them has used literature to preserve and promote their own languages and community identities.

Volume one puts states of North-East India

Price: 450/-